गुरु नानक – सबद २

आदि सचु जुगादि सचु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १

॥ जपु ॥
आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

सार: परम् सत्य प्रकृति में बसी एकता की चेतना है जिस में ठोस पदार्थ, तरल ऊर्जा और समय सब मिल कर एक वास्तविकता का स्वरुप बनाते हैं । प्रकृति का ज़ाहिरी रूप शून्यता के अलावा और कुछ नहीं है और शून्यता एक रूप के अलावा और कुछ नहीं है जो अतीत में मौजूद था, वर्तमान में मौजूद है और भविष्य में भी रहेगा। यह जागरूकता या चेतना इस बात की याद दिलाती है कि परम् सत्य अनन्त है।

॥ जपु ॥
जपु (चिंतन)

चिंतन के साथ यह दोहराने की पुष्टि कि उसे न भूलें जो स्वाभाविक रूप से ज्ञात है, लेकिन भूल जाती है।

आदि सचु जुगादि सचु ॥
आदि (स्रोत), सचु (सत्य), जुगादि (सदियां)

अदृश्य, सर्वव्यापी ऊर्जा की पूरी सृष्टि में मौजूदगी ही सृष्टि का बुनयादी स्रोत है; यही परम सत्य है।

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥
है भी (यह है), सचु (सत्य), होसी भी (यह ही रहेगा)

नानक कहते हैं कि यह वर्तमान में सत्य है और भविष्य में भी यही सत्य रहेगा। (१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं अस्तित्व की हक़ीक़त को जानना, मानव स्वभाव में ही मौजूद है। पदार्थ का रूप जो हमारे चारों ओर मौजूद है उनके साथ मन की भागीदारी में वास्तविकता को समझा जा सकता है। पर, विचारों के माध्यम से समझी जाने वाली वास्तविकता की धारणा से परे, जब मन चिंतन करता है, तो यह सत्य, शाश्वत, अटल, अन्दरून में मौजूद सर्वव्यापी ऊर्जा की एकता की ओर ही निर्देशित हो जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com